BA (Hons.) PART –II, Paper- III

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

मतदान व्यवहार (Voting Behaviour)

मतदान व्यवहार से तात्पर्य है कि मतदान करते समय मतदाता किन–किन तत्वों से प्रभावित होता है। भारत में मतदान व्यवहार का अध्ययन द्वितीय आम चुनाव के बाद किया जाने लगा। **प्रथम**, मतदान व्यवहार में यह अध्ययन किया जाता है कि मतदाता को मतदान करने में कौन–कौन तत्व प्रभावित करते हैं। **दूसरा**, मतदान व्यवहार में यह अध्ययन किया जाता है कि किन तत्वों से प्रभावित होकर मतदाता किसी विशेष राजनीतिक दल और विशेष उम्मीदवार को मत देता है।

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

1. **नेतृत्व** – अब तक हुए चुनावों से यह बात स्पष्ट होता है कि मतदाता को प्रभावित करने वाले मुख्य तत्व नेतृत्व है। प्रथम तीन आम चुनावों में कांग्रेस की सफलता का एक मुख्य कारण जवाहर लाल नेहरू का प्रभावशाली नेतृत्व और व्यक्तित्व था। वर्ष 1971 के चुनावों के समय श्रीमति इन्दिा गॉधी ने बंगलादेश का पक्ष लेकर और पाकिस्तान के प्रति कड़ा रूख अपनाकर कांग्रेस को लोकप्रिय बना दिया। 1980 तथा 1984 के लोकसभा चुनावों में जनता ने क्रमशः श्रीमति इन्दिरा गॉधी तथा राजीव गॉधी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मतदान किया। तेरहवीं लोकसभा के चुनाव में वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा और जनतान्त्रिक गठबन्धन ने निश्चित राजनीति लाभ पहुॅचाया। 16वीं एवं 17वीं लोकसभा चुनावों में जनता ने नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मतदान किया और भारतीय जनता पार्टी एवं अन्य जनतांत्रिक गठबंधन को लाभान्वित किया। इस चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ।

2. **जातिवाद** – भारत में जातिवाद मतदान व्यवहार को प्रभावित करने का प्रमुख कारक रहा है। चुनावों के समय प्रायः यह देखने को मिलता है कि लोग सर्वप्रथम अपनी ही जाति के उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करने के लिए तत्पर रहते हैं एवं जातिवाद की भावना से ग्रसित होकर मतदान करते हैं।
3. **दलों की विचारधारा, कार्यक्रम और नीति** – विभिन्न दलों की विचारधारा, कार्यक्रम और नीति कुछ समय तक मतदाता व्यवहार को प्रभावित करते हैं। गॉधीवादी सिद्वांतों पर चलने वाली कांग्रेस पार्टी काफी लम्बे समय तक विजयी होती रही। जनता यह सोचती थी कि कांग्रेस पार्टी मजदूरों व किसानों के हितों की रक्षा करने वाली है। 1977 के चुनाव में जनता ने जनता पार्टी के राजनीतिक कार्यक्रम "लोकतंत्र की रक्षा" को अपना मत दिया। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में जनता ने भारतीय जनता पार्टी के सुशासन व विकास के नाम पर अपना मत दिया।
4. **भ्रष्टाचार** – भ्रष्टाचार का मुद्दा भी मतदान को प्रभावित करता है। वर्ष 1989 के चुनाव में कांग्रेस की हार का प्रमुख कारण भ्रष्टाचार का मुद्दा था। पूर्व के चुनावों में बोफोर्स प्रकरण का मुद्दा भी काफी छाया रहा है।
5. **राजनीतिक स्थिरता और सुदृढ़ सरकार की आकांक्षा** – भारतीय मतदाता सामान्यतयाः राजनीतिक स्थायित्व और केन्द्र में सुदृढ़ शासन चाहते हैं। वर्ष 1989, 1991,1996 तथा 1998 में भी जनता राजनीतिक स्थिरता और सुदृढ़ सरकार चाहती थी, लेकिन जनता के समक्ष सही अर्थो में न तो कोई अखिल भारतीय दल था और न ही अखिल भारतीय व्यक्तित्व। वही दूसरी ओर क्षेत्रीय दलों और क्षेत्रीय सामन्तों की शक्ति में निरंतर वृद्वि हो रही थी, अतः जनता किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं दे सकी। 16वी लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का नेतृत्व कर रही भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला और यह सिद्व कर दिया कि जनता सुदृढ़ और स्थायी सरकार चाहती है।
6. **साम्प्रदायिकता का प्रभाव** – भारत में मतदान व्यवहार को साम्प्रदायिकता भी प्रभावित करता है। वर्ष 1991 में राममंदिर, बाबरी मस्जिद एक प्रमुख मुद्वा था। वर्ष 1996 में भी यह मुद्वा राजनीति का केन्द्र विन्दु था।

7. **क्षेत्रवाद का बढ़ता प्रभाव** – लोकसभा चुनावों में मतदान व्यवहार पर क्षेत्रीयता के मुद्दे का प्रभाव भी देखने को मिलता है। वर्ष 1970 तथा 1980 के दशकों में लोग राज्य विधानसभा के चुनावों में भी केन्द्रीय राजनीति के आधार बनाकर मतदान करते थे, लेकिन 1990 के दशक में इसमें एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया। अब राजनीतिक भक्ति, जनमत और सामाजिक पहचान भी राज्य के स्तर पर तय की जाने लगी।
8. **सरकार तथा प्रतिनिधियों का चुनाव** – भारत में लोकसभा चुनावों में मतदान व्यवहार के संबंध में यह बात स्पष्ट होता है कि जनता और समुदाय प्रतिनिधियों के चुनाव पर अधिक जोर देते हैं और उसके मतदान व्यवहार पर दलों द्वारा प्रचारित नीतियों, घोषणा पत्रों व मुद्दा का कोई महत्व नहीं मिल रहा है। वर्त्तमान समय में मतदाता जागरूक हो रहें है। वह परम्परागत जाति, धर्म कारकों के स्थान पर विकास के मुद्दे को ध्यान में रखकर मतदान करने लगा है।
9. **शासन की क्षमता–अक्षमता का प्रश्न** – जब कोई दल जनता का समर्थन खो देता है तो वह शासन नहीं कर सकता है। 1980 के चुनावों में इन्दिरा गॉधी का नारा था "ऐसी सरकार चुनिए, जो शासन कर सके।"